DEPARTMENT OF HINDI, GAUHATI UNIVERSITY

NEP-2020 FYUGP SYLLABUS

हिन्दी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम का पाठ्यक्रम

4th Year of FYUGP (Honours with Research) Syllabus

(PASSED IN THE CCS-UG HINDI MEETING HELD ON 02.05.2024)

{दिनांक 02.05.2024 को आयोजित सीसीएस-यूजी (CCS-UG) हिन्दी की बैठक में गृहीत}

चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम

विषय : हिन्दी

छमाही : सप्तम

कोर्स-कोड : HIN-070104

कोर्स का नाम : राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा

कोर्स-लेवल : 400

कुल अंक : 100

बाह्य परीक्षण : 60

आंतरिक परीक्षण : 40

इकाई	क्रेडिट	पाठ्य-विषय	कक्षा-संख्या	अंक (बाह्य परीक्षण+ आंतरिक परीक्षण)
1	**1**	**(क)** हिन्दी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा का उद्भव एवं विकास **(ख) मैथिलीशरण गुप्त** – मनुष्यता, हमारी सभ्यता, भारत की श्रेष्ठता	**15**	**25 (15+10)**
2	**1**	**माखनलाल चतुर्वेदी** – आ गए ऋतुराज, प्राण का शृंगार, सिपाही, सिपाहिनी	**15**	**25 (15+10)**
3	**1**	**रामधारी सिंह 'दिनकर'**– जनतंत्र का जन्म, भारत का यह रेशमी नगर, रक्षा करो देवता, अवकाशवाली सभ्यता	**15**	**25 (15+10)**
4	**1**	**सुभद्रा कुमारी चौहान** – झाँसी की रानी, व्यथित हृदय, स्वदेश के प्रति, वीरों का कैसा हो वसन्त ?	**15**	**25 (15+10)**

<u>निर्धारित पाठ्य-पुस्तक</u> :

राष्ट्रवाणी – डॉ॰ वासुदेव सिंह (संपा.), संजय बूक सेन्टर, वाराणसी ।

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ</u> :

1. *राष्ट्रीय काव्यधारा* – कन्हैया सिंह, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ।

2. *हिन्दी साहित्य का इतिहास* -- डॉ॰ नगेन्द्र (संपा.), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।

3. *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास* – डॉ॰ बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली ।

4. *मैथिलीशरण गुप्त के काव्य की अंतर्कथाओं के स्रोत* -- शशि अग्रवाल, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

5. *माखनलाल चतुर्वेदी : काव्य एवं दर्शन* – डॉ॰ दिनेश चन्द्र वर्मा, विद्या प्रकाशन, कानपुर ।

6. *दिनकर : अर्धनारीश्वर कवि* – नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली ।

7. *राष्ट्रभक्त कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान* – एम. राजस्वी, प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली ।

- **पूर्व-योग्यता :** स्नातक षष्ठ छमाही उत्तीर्ण
- **स्नातक-गुण :**

  <u>कोर्स का लक्ष्य</u> : *विद्यार्थियों को हिन्दी की समृद्ध राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के इतिहास तथा इस धारा के चुनिन्दा कवियों की सरस रचनाओं से परिचित कराकर उनमें राष्ट्रीयता की भावना एवं सांस्कृतिक चेतना को जगाना इस पाठ्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य है ।*

  <u>शिक्षण-उपलब्धि</u> : *राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा से संबंधित प्रस्तुत पाठ्यक्रम को इस रूप में तैयार किया गया है ताकि विद्यार्थीगण इसके गौरवशाली इतिहास एवं निर्धारित प्रमुख कवि एवं उनकी रचनाओं से परिचित होकर काव्य-रस एवं काव्य-बोध प्राप्त कर सकें, साथ ही मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर' और सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे कवियों की प्रतिभा एवं राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना का समुचित आकलन कर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में इस काव्यधारा की प्रासंगिकता का मूल्यांकन कर सकें ।*

- **सैद्धान्तिक क्रेडिट : 4**
- **व्यावहारिक क्रेडिट : 0**
- **आवश्यक कक्षाओं की संख्या : 60**

  प्रत्यक्ष कक्षाएँ **: 60**

  अप्रत्यक्ष कक्षाएँ **: 0**

चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम

विषय : हिन्दी

छमाही : सप्तम

कोर्स-कोड : HIN-070204

कोर्स का नाम : लोक संस्कृति एवं साहित्य

कोर्स-लेवल : 400

कुल अंक : 100

बाह्य परीक्षण : 60

आंतरिक परीक्षण : 40

इकाई	क्रेडिट	पाठ्य-विषय	कक्षा-संख्या	अंक (बाह्य परीक्षण+ आंतरिक परीक्षण)
1	**1**	लोक और लोक-वार्ता, लोक-संस्कृति की अवधारणा, लोक-वार्ता और लोक-संस्कृति, लोक-संस्कृति और साहित्य, साहित्य और लोक का अंतःसंबंध, लोक-साहित्य के अध्ययन की समस्याएँ	**15**	**25 (15+10)**
2	**1**	भारत में लोक-साहित्य के अध्ययन का इतिहास, लोक-साहित्य के प्रमुख रूपों का वर्गीकरण	**15**	**25 (15+10)**
3	**1**	**लोक-गीत :** संस्कार-गीत, व्रतगीत, श्रमगीत, ऋतुगीत, जातिगीत, बिहुगीत **लोक-कथा :** व्रतकथा, परीकथा, नागकथा, कथा-रूढ़ियाँ और अंधविश्वास	**15**	**25 (15+10)**
4	**1**	**लोक-नाट्य :** रामलीला, रासलीला, कीर्तनिया, यक्षगान, नौटंकी ; हिन्दी लोक-नाट्य की परम्परा एवं प्रविधि; हिन्दी नाटक एवं रंगमंच पर लोक-नाट्यों का प्रभाव	**15**	**25 (15+10)**

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ</u> :

1. *लोक साहित्य विज्ञान* – डॉ॰ सत्येन्द्र, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा।

2. *लोक-साहित्य की भूमिका* – डॉ॰ कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद ।

3. *गंगा घाटी के गीत* – डॉ॰ हीरालाल तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।

4. *लोक-साहित्य के विविध आयाम* – वीणा दाधे, अमन प्रकाशन, कानपुर ।

5. *लोक-साहित्य : अर्थ और व्याप्ति* – डॉ॰ सुरेश गौतम, साहित्य रत्नाकर, कानपुर ।

6. *लोकगीतों के सन्दर्भ और आयाम* – डॉ॰ शान्ति जैन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।

7. *बिहु एटि समीक्षा* -- लीला गगै, बनलता, गुवाहाटी ।

- **पूर्व-योग्यता :** स्नातक षष्ठ छमाही उत्तीर्ण
- **स्नातक-गुण :**

  <u>कोर्स का लक्ष्य</u> : *विद्यार्थियों को लोक, लोक-वार्ता, लोक-संस्कृति और लोक-साहित्य (लोक-गीत, लोक-नाट्य, लोक-कथा आदि) की सम्यक् जानकारी देते हुए उन्हें लोक-जीवन की सरसता की ओर उन्मुख करना प्रस्तुत पाठ्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य है ।*

  <u>शिक्षण-उपलब्धि</u> : *लोक संस्कृति एवं साहित्य से संबंधित प्रस्तुत पाठ्यक्रम को इस रूप में तैयार किया गया है ताकि विद्यार्थीगण भारतीय लोक-साहित्य की दीर्घ परम्परा से परिचित हो सकें एवं लोक-साहित्य के विविध रूपों– लोक-गीत, लोक-कथा एवं लोक-नाट्य के प्रकारों की जानकारी प्राप्त कर आधुनिक समय में लोक संस्कृति एवं साहित्य के अध्ययन की आवश्यकता का समुचित मूल्यांकन कर सकें ।*

- **सैद्धान्तिक क्रेडिट : 4**
- **व्यावहारिक क्रेडिट : 0**
- **आवश्यक कक्षाओं की संख्या : 60**

  प्रत्यक्ष कक्षाएँ **: 60**

  अप्रत्यक्ष कक्षाएँ **: 0**

चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम

विषय : हिन्दी

छमाही : सप्तम

कोर्स-कोड : HIN-070304

कोर्स का नाम : पूर्वोत्तर में हिन्दी : भाषा और साहित्य

कोर्स-लेवल : 400

कुल अंक : 100

बाह्य परीक्षण : 60

आंतरिक परीक्षण : 40

इकाई	क्रेडिट	पाठ्य-विषय	कक्षा-संख्या	अंक (बाह्य परीक्षण+ आंतरिक परीक्षण)
1	**1**	**पूर्वोत्तर में हिन्दी की स्थिति :** असम में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का विस्तृत इतिहास; मेघालय, मिज़ोरम, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, त्रिपुरा एवं सिक्किम में हिन्दी के प्रचार-प्रसार की सामान्य जानकारी	**15**	**25 (15+10)**
2	**1**	असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी; मणिपुर हिन्दी प्रचार सभा, इम्फ़ाल; असम राष्ट्रभाषा सेवक संघ, गुवाहाटी; असम राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, जोरहाट; केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की गुवाहाटी, शिलांग और दीमापुर शाखाएँ; मेघालय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, शिलांग; केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, गुवाहाटी शाखा की गतिविधियाँ। पूर्वोत्तर से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ (दैनिक पूर्वोदय, सेंटीनल, पूर्वाञ्चल प्रहरी, प्रातः ख़बर, समन्वय पूर्वोत्तर, राष्ट्रसेवक, मेघालय दर्पण आदि)	**15**	**25 (15+10)**
3	**1**	**राह और रोड़े** -- छगनलाल जैन (उपन्यास)	**15**	**25 (15+10)**
4	**1**	**हीली बोन् की बत्तखें** – अज्ञेय (कहानी)	**15**	**25**

		भिण्डी के फूल – डॉ॰ हीरालाल तिवारी **(**गद्यकाव्य**)** **माझुली –** अज्ञेय **(**यात्रा-वृत्तान्त**)**		**(15+10)**

<u>पाठ्य-पुस्तकें एवं सन्दर्भ ग्रन्थ</u> :

1. *राष्ट्रभाषा प्रचार - एक झांकी* – चित्र महन्त, असम हिन्दी प्रकाशन, गुवाहाटी ।

2. *राष्ट्रभाषा का इतिहास* – चित्र महन्त, असम हिन्दी प्रकाशन, गुवाहाटी ।

3. *राह और रोड़े* -- छगनलाल जैन, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी ।

4. *जय-दोल* – अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली ।

5. *हिन्दी गद्य-संकलन* – डॉ॰ परेशचन्द्र देव शर्मा एवं डॉ॰ हीरालाल तिवारी **(**संपा**.)**, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी ।

6. *अज्ञेय और पूर्वोत्तर भारत* – रीतारानी पालीवाल **(**संपा.**)**, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ।

7. *हीर-ज्योति* – डॉ॰ अमूल्य चन्द्र बर्मन एवं डॉ॰ अच्युत शर्मा **(**संपा**.)**, हिन्दी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय ।

- **पूर्व-योग्यता :** स्नातक षष्ठ छमाही उत्तीर्ण
- **स्नातक-गुण :**

  <u>कोर्स का लक्ष्य</u> : *विद्यार्थियों को पूर्वोत्तर भारत के आठों प्रान्तों में हिन्दी को लेकर चल रही गतिविधियों की जानकारी देते हुए उन्हें पूर्वोत्तर के रचनाकारों द्वारा रचित अथवा पूर्वोत्तर के बारे में रचित चुनी हुई हिन्दी-रचनाओं से परिचित कराना प्रस्तुत पाठ्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य है ।*

  <u>शिक्षण-उपलब्धि</u> : *पूर्वोत्तर में हिन्दी : भाषा और साहित्य से संबंधित प्रस्तुत पाठ्यक्रम को इस रूप में तैयार किया गया है ताकि विद्यार्थीगण पूर्वोत्तर के आठों प्रान्तों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के इतिहास एवं पूर्वोत्तर में कार्यरत विभिन्न संस्थानों और पूर्वोत्तर से प्रकाशित विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं की जानकारी से अवगत हो सकें तथा निर्धारित उपन्यास, कहानियों एवं यात्रा-वृत्तान्त के माध्यम से साहित्यास्वाद प्राप्त करते हुए आधुनिक संदर्भ में पूर्वोत्तर में उभरते हुए हिन्दी भाषा-साहित्य की प्रासंगिकता का समुचित आकलन कर सकें ।*

- **सैद्धान्तिक क्रेडिट : 4**
- **व्यावहारिक क्रेडिट : 0**
- **आवश्यक कक्षाओं की संख्या : 60**

  प्रत्यक्ष कक्षाएँ **: 60**

  अप्रत्यक्ष कक्षाएँ **: 0**

चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम

विषय : हिन्दी

छमाही : सप्तम

कोर्स-कोड : HIN-070404

कोर्स का नाम : विश्व में हिन्दी : परिदृश्य एवं प्रवासी साहित्य

कोर्स-लेवल : 400

कुल अंक : 100

बाह्य परीक्षण : 60

आंतरिक परीक्षण : 40

इकाई	क्रेडिट	पाठ्य-विषय	कक्षा-संख्या	अंक (बाह्य परीक्षण+ आंतरिक परीक्षण)
1	**1**	**हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य :** विश्व फलक पर हिन्दी, हिन्दी का वैश्वीकरण एवं विश्व हिन्दी सम्मेलन, विदेशों में हिन्दी की लोकप्रियता, भूमंडलीकरण के युग में हिन्दी	**15**	**25 (15+10)**
2	**1**	**प्रमुख प्रवासी हिन्दी साहित्यकार :** अभिमन्यु अनत, तेजेन्द्र शर्मा, जाकिया जुबेरी, सुधा ओम ढींगरा, पूर्णिमा बर्मन, पद्मेश गुप्त, कृष्ण किशोर, सुषम वेदी, उषा वर्मा, शिखा वार्ष्णेय	**15**	**25 (15+10)**
3	**1**	**लाल पसीना** (अभिमन्यु अनत)	**15**	**25 (15+10)**
4	**1**	**कोख का किराया** (तेजेन्द्र शर्मा), **साँकल** (जाकिया जुबेरी), **कौन-सी ज़मीन अपनी** (सुधा ओम ढींगरा), **यों ही चलते हुए** (पूर्णिमा बर्मन)	**15**	**25 (15+10)**

<u>पाठ्यपुस्तकें एवं ऑनलाइन लिंक्स</u> :

1. *भारत और विश्व पटल पर हिन्दी* – डॉ॰ सुशीला गुप्ता (संपा.), अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ, नयी दिल्ली।

2. *लाल पसीना* – अभिमन्यु अनत, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।

3. *कोख का किराया* -- तेजेन्द्र शर्मा
   https://www.hindisamay.com/content/1051/1/तेजेंद्र-शर्मा-कहानियाँ-कोख-का-किराया.cspx
4. *साँकल* -- जाकिया जुबेरी
   https://www.matrubharti.com/novels/16546/saankal-by-zakia-zubairi
5. *कौन-सी ज़मीन अपनी* -- सुधा ओम ढींगरा, भावना प्रकाशन, नयी दिल्ली।
6. *यों ही चलते हुए* -- पूर्णिमा बर्मन
   http://www.abhivyakti-hindi.org/lekhak/purnimavarman.htm

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. *विश्वपटल पर हिन्दी* – सूर्यप्रसाद दीक्षित, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. *अभिमन्यु अनत का उपन्यास साहित्य* – डॉ॰ श्रीचित्रा. वी. एस., विद्या प्रकाशन, कानपुर।
3. *तेजेन्द्र शर्मा का रचना-संसार* – प्रो॰ प्रदीप श्रीधर, विनय प्रकाशन, कानपुर।
4. *साँकल : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन* – पूजा प्रजापति, साहित्य रत्नाकर, कानपुर।
5. *हिन्दी का प्रवासी साहित्य* – डॉ॰ कालीचरण स्नेही, विद्या प्रकाशन, कानपुर।
6. *प्रवासी लेखन : नयी ज़मीन नया आसमान* – अनिल जोशी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
7. *प्रवासी भारतीय हिन्दी साहित्य* – डॉ॰ विमलेश कांति शर्मा (संपा.), वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।

- **पूर्व-योग्यता :** स्नातक षष्ठ छमाही उत्तीर्ण
- **स्नातक-गुण :**

  कोर्स का लक्ष्य : *विद्यार्थियों को विश्व के अलग-अलग देशों में हिन्दी की परिव्याप्ति की जानकारी दिलाकर प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों द्वारा रचित रचनाओं का रसास्वादन कराना और उनमें निहित जीवन-संघर्ष से परिचित कराना प्रस्तुत पाठ्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य है।*

  शिक्षण-उपलब्धि : *विश्व में हिन्दी के परिदृश्य और प्रवासी साहित्य से संबंधित प्रस्तुत पाठ्यक्रम को इस रूप में तैयार किया गया है ताकि विद्यार्थीगण विश्व फलक पर हिन्दी की स्थिति एवं लोकप्रियता से परिचित हो सकें तथा निर्धारित उपन्यास एवं कहानियों के माध्यम से प्रवासी हिन्दी साहित्य में प्रतिफलित जीवन-संघर्ष एवं सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं का अध्ययन कर शोधान्वेषी दृष्टिकोण विकसित कर सकें।*

- **सैद्धान्तिक क्रेडिट : 4**
- **व्यावहारिक क्रेडिट : 0**
- **आवश्यक कक्षाओं की संख्या : 60**

  प्रत्यक्ष कक्षाएँ **: 60**

  अप्रत्यक्ष कक्षाएँ **: 0**

चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम

विषय : हिन्दी

छमाही : सप्तम

कोर्स-कोड : HIN-070504

कोर्स का नाम : शोध-प्रविधि एवं प्रक्रिया

कोर्स-लेवल : 400

कुल अंक : 100

बाह्य परीक्षण : 60

आंतरिक परीक्षण : 40

इकाई	क्रेडिट	पाठ्य-विषय	कक्षा-संख्या	अंक (बाह्य परीक्षण+ आंतरिक परीक्षण)
1	**1**	**शोध :** अर्थ, परिभाषा, महत्व, क्षेत्र, उद्देश्य ; शोधार्थी के गुण; शोध एवं आलोचना ; शोध की भाषा ; आलोचना की भाषा; सर्जनात्मक साहित्य की भाषा ; हिन्दी में शोध की समस्याएँ एवं भविष्य	**15**	**25 (15+10)**
2	**1**	**शोध की विविध प्रविधियाँ :** समीक्षात्मक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक, सर्वेक्षणात्मक, मूल्यांकनपरक, पाठालोचन, पाठानुसंधान आदि ; शोध के विविध क्षेत्र-- काव्य, गद्य की विविध विधाएँ, साहित्य का इतिहास, लोक-साहित्य आदि	**15**	**25 (15+10)**
3	**1**	**शोध-प्रक्रिया :** विषय-चयन, सामग्री-संकलन, शोध-कार्य का विभाजन (अध्याय, शीर्षक, उपशीर्षक), विषय-सूची, प्रस्तावना, संदर्भ-उल्लेख, ग्रंथ-सूची, पाद-टिप्पणी, संलग्नक, लेखन और सम्पादन	**15**	**25 (15+10)**
4	**1**	प्रकाशन-नैतिकता : अवधारणा एवं महत्व प्रकाशन-कदाचार : परिभाषा एवं अवधारणा, साहित्यिक चोरी, दोहराव एवं परस्परव्यापी प्रकाशन (Duplicate and overlapping publication), कॉपीराइट	**15**	**25 (15+10)**

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ</u> :

1. *शोध प्रविधि* -- डॉ. विनय मोहन शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।

2. *अनुसंधान का स्वरूप* -- सावित्री सिन्हा (संपा), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।

3. *अनुसंधान की प्रक्रिया* -- सावित्री सिन्हा और विजयेन्द्र शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।

4. *अनुसंधान की प्रविधि: सिद्धान्त और प्रक्रिया* – डॉ॰ एस. एन. गणेशन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

5. *शोध और सिद्धान्त* – डॉ॰ नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।

6. *शोध प्रस्तुति* -- उमा पांडे, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।

7. *शोध : स्वरूप एवं मानक व्यावहारिक कार्यविधि* -- बैजनाथ सिंहल, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली ।

8. *हिन्दी अनुसंधान के आयाम* -- बी.एच. राजुरकर और राजमल बोरा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली ।

9. *Research and Thesis Writing* **--** J.C. Almach (1930), Baston, Houghton Mafflin Company.

10. *Technique of Research in Education* **--** C.C. Craford (1928), Boston, Houghton Mafflin Company.

11. *Introduction to Research* **--** Tyrus Hill way (1956), Boston, Houghton Mafflin Company.

12. *Scientific Method, its function in Research in Education* **--** T. L Kelly (1932), New York, Macmillan Company.

13. *The Science of Educational Research* **--** George J. Mouly (1964), New Delhi Eurasia Publishing House Pvt. Ltd.

14. *Educational Research Methods* **--** J.D. Nisleet And N.J. Entwistle (1970), London, University of London Press.

15. *An Introduction to Educational Research* **--** Robert M.W. Travers (1958), Macmillan Company, New York.

16. *The Elements of Research* **--** Frederick Lamson Whitny (1950), Englewood Cliffs, Prentice Hall Ine.

- **पूर्व-योग्यता :** स्नातक षष्ठ छमाही उत्तीर्ण
- **स्नातक-गुण :**

  <u>कोर्स का लक्ष्य</u> : *विद्यार्थियों को शोध की विविध प्रविधियों एवं प्रक्रियाओं की जानकारी देकर मानक शोध के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक स्वरूप से परिचित कराना प्रस्तुत पाठ्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य है।*

  <u>शिक्षण-उपलब्धि</u> : *शोध-प्रविधि एवं प्रक्रिया से संबंधित प्रस्तुत पाठ्यक्रम को इस रूप में तैयार किया गया है ताकि विद्यार्थीगण मानक शोध के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक स्वरूप तथा शोध और प्रकाशन की नैतिकता एवं कदाचार से भली-भाँति परिचित हो जाएँ और एक वैज्ञानिक, गहन अध्ययनशील एवं नैतिकतापूर्ण शोध-प्रवृत्ति का विकास कर पाएँ।*

- **सैद्धान्तिक क्रेडिट : 4**
- **व्यावहारिक क्रेडिट : 0**
- **आवश्यक कक्षाओं की संख्या : 60**

प्रत्यक्ष कक्षाएँ **: 60**
अप्रत्यक्ष कक्षाएँ **: 0**

चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम

विषय : हिन्दी

छमाही : अष्टम

कोर्स-कोड : HIN-080116

कोर्स का नाम : लघु शोध-प्रबंध

कोर्स-लेवल : 400

कुल अंक : 400

लेखन : 260

प्रस्तुति : 140

<u>लघु शोध-प्रबंध लेखन एवं प्रस्तुति की शर्तें</u> :

1. लघु शोध-प्रबंध का विषय हिन्दी भाषा और साहित्य से संबंधित होना अनिवार्य है। तुलनात्मक शोध के संदर्भ में हिन्दी भाषा या साहित्य के साथ किसी अन्य भाषा या साहित्य का अध्ययन किया जा सकता है।
2. लघु शोध-प्रबंध के लिए शोध-निर्देशक एवं शोध-विषय विद्यार्थी को उक्त छमाही के आरम्भ में ही विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के संबद्ध विभाग द्वारा निर्धारित कर दे दिए जाएंगे।
3. लघु शोध-प्रबंध **50,000 (**पचास हजार**)** शब्दों में सीमित हो। प्रस्तावना, उपसंहार, ग्रंथ-सूची, संलग्नक आदि के अतिरिक्त कम-से-कम चार अध्यायों में शोध-कार्य सम्पन्न हो। प्रत्येक अध्याय में लगभग समान शब्द हों।
4. विद्यार्थी को अपने लघु शोध-प्रबंध को स्वयं कम्प्यूटर में टंकित कर जमा करना होगा। विद्यार्थी को लघु शोध-प्रबंध की प्रचलित मानक पद्धति के आधार पर अपने लघु शोध-प्रबंध को तैयार कर उक्त छमाही के अंतिम महीने के प्रथम **15** दिन के भीतर जमा करना होगा।
5. मौखिकी में विद्यार्थी पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन द्वारा अपनी प्रस्तुति देंगे। इस प्रस्तुति में विभागीय अध्यक्ष, लघु शोध-प्रबंध के निर्देशक, विभागीय प्राध्यापकगण एवं विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के कुलपति/अध्यक्ष के नामित प्रतिनिधि की उपस्थिति अपेक्षित है।
6. विभाग के अध्यक्ष, लघु शोध-प्रबंध के निर्देशक और विश्वविद्यालय/महाविद्यालय के कुलपति/अध्यक्ष द्वारा नामित प्रतिनिधि से बनी मूल्यांकन-समिति में से अध्यक्ष/कुलपति के प्रतिनिधि **45** अंक तथा विभाग के अध्यक्ष **50** अंक एवं लघु शोध-प्रबंध के निर्देशक **45** अंक के अन्तर्गत मूल्यांकन करेंगे।

7. लघु शोध-प्रबंध के मूल्यांकन के दौरान अन्य बातों के साथ ही विद्यार्थी की शोधपरक नैतिकता, वैज्ञानिकता तथा मौलिक उद्भावनागत क्षमता को ध्यान में रखा जायेगा।

- **पूर्व-योग्यता :** स्नातक षष्ठ छमाही उत्तीर्ण
- **स्नातक-गुण :**

  <u>कोर्स का लक्ष्य</u> : *विद्यार्थियों की शोध-प्रवृत्ति को जगाना, उनकी आलोचनात्मक समीक्षा की योग्यता को प्रोत्साहित करना, साथ ही तकनीकी (डी.टी.पी., पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के रूप में) उपयोग हेतु उन्हें प्रेरित करना इस पाठ्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य है।*

  <u>शिक्षण-उपलब्धि</u> : *लघु शोध-प्रबंध से संबंधित प्रस्तुत पाठ्यक्रम को इस रूप में तैयार किया गया है ताकि विद्यार्थीगण हिन्दी भाषा-साहित्य के स्वतंत्र अध्ययन अथवा किसी अन्य भाषा-साहित्य के साथ तुलनात्मक/व्यतिरेकी अध्ययन से संबद्ध विषय के गहन अनुशीलन एवं शोध-संबंधी सैद्धांतिक ज्ञान का प्रयोग कर अपनी आलोचनात्मक समीक्षा के सामर्थ्य को विकसित कर सकें तथा तकनीकी उपयोग की दिशा में भी अपने-आपको सक्षम बना सकें।*

- **क्रेडिट : 16**

चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम

विषय : हिन्दी

छमाही : अष्टम

कोर्स-कोड : HIN-080204

कोर्स का नाम : संगोष्ठी-पत्र प्रस्तुतीकरण

कोर्स-लेवल : 400

कुल अंक : 100

संगोष्ठी-पत्र-लेखन : 60

संगोष्ठी-पत्र प्रस्तुति : 40

<u>संगोष्ठी-पत्र लेखन एवं प्रस्तुति की शर्तें</u> :

1. प्रस्तुत पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थी को किसी एक हिन्दी साहित्यिक विभूति के जीवन एवं साहित्यिक उपलब्धियों पर साहित्य-सर्वेक्षण के तहत एक संगोष्ठी-पत्र एक शोध-निर्देशक के अधीन रहकर संपादित करना होगा।
2. संगोष्ठी-पत्र का विषय (निम्नलिखित सूची में से) और शोध-निर्देशक विद्यार्थी को उक्त छमाही के आरम्भ में ही महाविद्यालय/विश्वविद्यालय के संबद्ध विभाग द्वारा निर्धारित कर दे दिए जाएंगे।
3. संगोष्ठी-पत्र **10,000 (**दस हजार) शब्दों में सीमित हो। प्राध्यापकों द्वारा निर्धारित किए गए विषय पर विद्यार्थी को अपने संगोष्ठी-पत्र को स्वयं कम्प्यूटर में टंकित कर जमा करना होगा। विद्यार्थी को संगोष्ठी-पत्र की प्रचलित मानक पद्धति में तैयार किए गए अपने संगोष्ठी-पत्र को उक्त छमाही की अन्तिम परीक्षा के आरम्भ के एक सप्ताह पूर्व ही जमा करना होगा।
4. प्रस्तुति (मौखिकी) में विद्यार्थी पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन द्वारा अपना प्रस्तुतीकरण देंगे। इस प्रस्तुति में विभागीय अध्यक्ष, संगोष्ठी-पत्र-निर्देशक, विभागीय प्राध्यापकगण एवं महाविद्यालय/विश्वविद्यालय के अध्यक्ष/कुलपति या उनके प्रतिनिधि की उपस्थिति अपेक्षित है।
5. विभाग के अध्यक्ष, संगोष्ठी-पत्र के निर्देशक और महाविद्यालय/विश्वविद्यालय के अध्यक्ष/कुलपति या उनके द्वारा नामित प्रतिनिधि से बनी मूल्यांकन-समिति में से अध्यक्ष/कुलपति या उनके प्रतिनिधि **40** अंक (लेखन : 25 + प्रस्तुति : 15) तथा विभाग के अध्यक्ष **35** अंक (लेखन : 20 + प्रस्तुति : 15) एवं संगोष्ठी-पत्र के निर्देशक **25** अंक (लेखन : 15+ प्रस्तुति : 10) के अन्तर्गत मूल्यांकन करेंगे।
6. संगोष्ठी-कार्य के मूल्यांकन के दौरान अन्य बातों के साथ ही विद्यार्थी की आलोचनात्मक समीक्षा की योग्यता को ध्यान में रखा जायेगा।

हिन्दी साहित्यिक विभूति

चंदबरदाई, विद्यापति, कबीरदास, मलिक मुहम्मद जायसी, सूरदास, मीराँबाई, गोस्वामी तुलसीदास, रहीम, रसखान, केशवदास, बिहारीलाल, देव, भूषण, घनानन्द, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पन्त, भगवतीचरण वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', हरिवंशराय 'बच्चन', रामधारी सिंह 'दिनकर', आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ॰ नगेन्द्र, जैनेन्द्र कुमार, यशपाल, लक्ष्मीनारायण मिश्र, भवानीप्रसाद मिश्र, धर्मवीर भारती, नागार्जुन, 'मुक्तिबोध', फणीश्वरनाथ 'रेणु', उषा प्रियम्वदा, मन्नू भण्डारी, अमृतलाल नागर, निर्मल वर्मा, श्रीलाल शुक्ल, कमलेश्वर, लक्ष्मीनारायण लाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, विद्यानिवास मिश्र, हरिशंकर परसाई, राहुल सांकृत्यायन, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, मोहन राकेश, सुदामा पाण्डेय 'धूमिल', शंकरशेष, लीलाधर जगूड़ी, अशोक वाजपेयी, शेखर जोशी, अरुण कमल

- **पूर्व-योग्यता :** स्नातक षष्ठ छमाही उत्तीर्ण
- **स्नातक-गुण :**

  कोर्स का लक्ष्य : *विद्यार्थियों की शोध-प्रवृत्ति को जगाना, उनकी आलोचनात्मक समीक्षा की योग्यता को प्रोत्साहित करना, साथ ही तकनीकी (डी.टी.पी., पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के रूप में) उपयोग हेतु उन्हें प्रेरित करना इस पाठ्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य है।*

  शिक्षण-उपलब्धि : *संगोष्ठी-पत्र प्रस्तुतीकरण से संबंधित प्रस्तुत पाठ्यक्रम को इस रूप में तैयार किया गया है ताकि विद्यार्थीगण हिन्दी साहित्य की महान विभूतियों के जीवन, कृतियों एवं साहित्यिक उपलब्धियों के गहन अध्ययन एवं शोध-संबंधी सैद्धांतिक ज्ञान का प्रयोग कर अपनी आलोचनात्मक समीक्षा के सामर्थ्य द्वारा उनका समुचित मूल्यांकन कर सकें; साथ ही तकनीकी उपयोग की दिशा में भी अपने-आपको सक्षम बना सकें।*

- **क्रेडिट : 4**